उम्रा की फ़ज़ीलत और उसका तरीक़ा

(तथा उसकी गलतियों पर चेतावनी)

संकलन

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

संशोधन

शफीकुर्रहमान ज़ियाउल्लाह

www.islamhouse.com

1428-2007

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो अति मेहरबान और दयालु है।

الحمد لله رب العالمين، والصلاة والسلام على نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين، أما بعد:

सभी प्रकार की प्रशंसाये अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं, और दरूद व सलाम अवतरित हो हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर और आप की संतान और आप के सभी साथियों पर।

इस्लामी भाईयो! परम प्रमेश्वर, श्रृष्टि के रचयता और सर्व जगत के पालनहार अल्लाह तआला की इस उम्मत (मुस्लिम समुदाय) पर महान कृपा, अनुकम्पा और एहसान है कि उस ने थोड़े से काम पर व्यापक और असंख्य अज्र व सवाब (पुण्य) का वादा किया है, तथा उन्हें नेकियाँ कमाने के विशेष अवसर प्रदान किये हैं। उन्हीं में से एक उम्रा भी है जिस पर शुरू से ले कर अन्त तक हर-हर हरकत पर अज्र व सवाब लिखा जाता है। इस सार लेख में उम्रा का शुद्ध तरीक़ा और उस पर प्राप्त होने वाले अज्र व सवाब का उल्लेख किया जा रहा है:

उम्रा की फ़ज़ीलत

☆ अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **"एक उम्रे से**

दूसरा उम्रा उन दोनों के बीच (होने वाले गुनाहों) का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) है।" (सहीह मुस्लिम)

🕐 अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा रिवायत करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **"एक के बाद दूसरा हज्ज एंव उम्रा करते रहो; क्योंकि यह दोनों गरीबी और गुनाहों को ऐसे ही मिटा देते हैं जिस प्रकार लोहार की भठ्ठी लोहे के मैल (ज़ंग) को मिटा देती है।"** (त्रिमिज़ी)

🕑 अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा रिवायत करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **"रमज़ान में उम्रा करना हज्ज के समान है।"** एक रिवायत के शब्द यह हैं किः **"मेरे साथ हज्ज करने के समान है।"** (बुखारी व मुस्लिम)

अर्थात उस का सवाब हज्ज के बराबर है और वह किसी साधारण हज्ज नहीं, बल्कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हज्ज के बराबर सवाब है, किन्तु यदि किसी ने अपना अनिवार्य हज्ज नहीं किया है तो रमज़ान के महीने में उम्रा कर लेने से उसके हज्ज का फरीज़ा पूरा नहीं होगा।

🕒 हज्ज व उम्रा अल्लाह के मार्ग में जिहाद (संघर्ष) करने के समान है, विशेष रूप से बूढ़े, बच्चों, कमज़ोरों और स्त्रियों के लिए। (देखिएः सहीहुल जामिअ:1599, सहीहुत–तरग़ीबः 1119, सहीह सुनन नसाईः 2463)

🕓 हज्ज व उम्रा करने वाले अल्लाह के वफद हैं जो अल्लाह के निमन्त्रण पर हाज़िर होते हैं और अल्लाह तआला उनकी दुआएं स्वीकार करता है। (देखिएः सहीह सुनन नसाईः 2924, सहीह सुनन इब्ने माजहः2339)

उम्रा का तरीक़ा

1. मीक़ात से एहरामः

➢ उम्रा करने के इच्छुक (मर्द व औरत) मीक़ात पर पहुँच कर अपने शरीर की सफाई करें, स्नान करें, शरीर में सुगन्ध लगाएं (एहराम के कपड़ों में नहीं)। यहाँ तक कि माहवारी और प्रसव वाली औरतें भी ग़ुस्ल करें गी। फिर एहराम के कपड़े (लुंगी और चादर) पहन लें, बेहतर यह है कि दोनों कपड़े सफेद हों। स्त्रियाँ किसी भी प्रकार के कपड़े पहन सकती हैं, किन्तू उन से बेपर्दगी, ज़ेब व ज़ीनत और श्रृंगार का प्रदर्शन न होता हो, और न ही पुरूष के कपड़ों के समान हो।

➢ फिर दिल से उम्रा की इबादत में दाखिल होने की नीयत करें; क्योंकि अमलों का आधार नियतों पर है। तथ ज़ुबान से उसका इज़हार करते हुए لَبَّيْكَ عُمْرَةً (लब्बैका उम्रह) या اَللَّهُمَّ لَبَّيْكَ عُمْرَةً (अल्लाहुम्मा लब्बैका उम्रह)कहें। और अधिक से अधिक यह तल्बियह दोहराते रहें:

((لَبَّيْكَ اَللَّهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ، إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ، لاَ شَرِيْكَ لَكَ)).

(लब्बैका, अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैका ला शरीका लका लब्बैक, इन्नल हम्दा वन्नेमता लका वल मुल्क, ला शरीका लक)

पुरूष ऊँचे स्वर में कहें और स्त्रियाँ धीमे से।

अगर उसे किसी कारणवश उम्रा पूरा न कर पाने का भय हो तो वह उम्रा की नीयत करते समय यह शर्त लगा ले:

إِنْ حَبَسَنِيْ حَابِسٌ فَمَحِلِّيْ حَيْثُ حَبَسْتَنِيْ

(इन हबा–सनी हाबिसुन फ–महिल्ली हैसो हबस्–तनी)

"जहाँ मुझे कोई रूकावट पेश आ गई वहीं मैं हलाल हो जाऊँगा।"

एहराम की हालत में निषेध कामः

ज्ञात रहे कि उम्रा की इबादत में प्रवेश करने की नीयत कर लेने के बाद मोहरिम के लिए कुछ काम निषेध हो जाते हैं, जो निम्न लिखित हैं:

✶ सर के बाल, इसी प्रकार शरीर के किसी भी अंग के बाल, या हाथ-पैर के नाखुन काटना, अगर स्वयं ही कोई बाल या नाखुन अलग हो जाता है तो कोई बात नहीं।

✶ शरीर या कपड़े, तथा खाने-पीने की किसी वस्तु में किसी प्रकार का सुगन्ध प्रयोग कना।

✶ खुश्की (धर्ती) के जानवर का शिकार करना, उसे बिदकाना और दूसरों की इस काम में मदद करना।

❋ शादी करना या करवाना, या किसी को शादी का पैग़ाम देना।

⌖ मर्द का सर से मिलने वाली किसी वस्तु से अपना सर ढाँकना, जैसे टोपी, रूमाल, हैट आदि, किन्तु जो चीज़ सर से मिली हुई न हो, जैसे छत्री, गाड़ी की छत की छाया आदि तो इस में कोई हरज नहीं।

⌖ मर्द का पूरे शरीर या शरीर के किसी अंग के नाप का सिला हुवा कपड़ा पहनना। जैसे क़मीस, टोपी, पगड़ी, पाजामा, मोज़ा आदि।

✧ सम्भोग (हमबिस्तरी) करना।

⌑ औरत का एहराम की हालत में दोनों हाथों में दसताने पहनना, नक़ाब या बुरक़े से अपने चेहरे को छुपाना। यदि अजनबी और गैर महरिम पुरूषों का सामना हो रहा हो तो फिर चेहरे को ओढ़नी या किसी अन्य वस्तु से छिपाना वाजिब।

⍰ शह्वत के साथ संसर्ग करना, अर्थात शहवत के साथ बीवी से चिपकना, चुंबन करना और छूना आदि।

2. खाना–काबा का तवाफ़:

♉ मक्का मुकर्रमा में प्रवेश करने से पहले अगर हो सके तो स्नान करना मुस्तहब है।

➢ मस्जिदे हराम पहुंच कर दाहिना क़दम आगे बढ़ाएं और मस्जिद में दाखिल होने की दुआः

"بسم الله، والصلاة والسلام على رسول الله، اللهم افتح لي أبواب رحمتك، أعوذ بالله العظيم وبوجهه الكريم وسلطانه القديم من الشيطان الرجيم "

पढ़ कर अन्दर दाखिल हों।

➢ काबा के पास पहुंच कर तल्बिया बंद कर दें, फिर हज्रे अस्वद के निकट जाएं, उसे अपने दाहिने हाथ से छुएं और हो सके तो उसे बोसा दें और उस पर सज्दह करें, किन्तु इसके लिए लोगों को धक्का न दें। छूते या चूमते समय **"बिस्मिल्लाह, अल्लाहु अक्बर"** कहें। अगर बोसा देना कठिन हो तो अपने हाथ से या लाठी आदि से छुएं और जिस से छुआ है उस को चूमें, अगर छूना भी मुश्किल है तो **"अल्लाहु अक्बर"** कहते हुए उस की ओर **एक बार** संकेत करें और जिस से संकेत किया है उसे न चूमें।

इसी प्रकार तवाफ़ के हर चक्कर में करें।

➢ काबा को अपने बायें ओर कर लें और **सात** चक्कर उस का तवाफ करें। हज्रे अस्वद से प्रारम्भ हो कर वापस हज्रे अस्वद पर एक चक्कर पूरा होता है।

ज्ञात रहे कि तवाफ के शुद्ध होने के लिए बा- वुज़ू होना शर्त है।

माहवारी और प्रसव वाली औरतें जब तक पाक नहीं हो जातीं, तवाफ नहीं कर सकतीं।

ज्ञात रहे कि इस तवाफ में पुरूषों के लिए पहले तीन चक्करों में **रमल** करना और सातों चक्करों में **इज़्तिबाअ्** करना मुस्तहब है। **रमल** कहते हैं: **छोटे-छोटे पगों के साथ तेज़ी से चलना** और **इज़्तिबाअ्** यह है कि दाहिने कन्धे को खुला रखते हुए चादर के मध्य भाग को अपने दाहिने मोंढे के नीचे (बगल में) कर लें और उसके दोनों किनारों को बायें कंधे के ऊपर डाल लें।

जब यमनी कोने के बराबर में पहुँचे तो हो सके तो उसे अपने दाहिने हाथ से छुएं, किन्तु उसे बोसा नहीं दे गें, और अगर छूना कठिन हो तो उसकी ओर संकेत भी न करें।

तवाफ़ के दौरान कोई विशिष्ट दुआ या ज़िक्र साबित नहीं है, बल्कि जो भी दुआ या ज़िक्र या कुर्ऑन की तिलावत करना चाहें कर सकते हैं, किन्तु यमनी कोना और हज्रे अस्वद के बीच नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हर चक्कर में यह दुआ पढ़ना प्रमाणित है:

﴿ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ﴾ [البقرة: ٢٠١].

ऐ हमारे रब ! हमें इस संसार में भलाई प्रदान कर और प्रलोक में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक के अज़ाब से बचा। (सूरतुल बक़रः 201)

सातवाँ चक्कर पूरा करने के बाद मर्द अपना दाहिना कंधा ढाँप लें, और मक़ामे इब्राहीम की ओर जाएं और यह आयत पढ़ें:

﴿ وَاتَّخِذُواْ مِن مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى ﴾

मक़ामे इब्राहीम को अपने और खाना काबा के बीच करके अगर सम्भव है तो उसके निकट (वर्ना मस्जिद में किसी भी स्थान पर) दो रक्अत नमाज़ (तवाफ की सुन्नत) पढ़े, जिस में पहली रक्अत में सूरह अल-काफिरून और दूसरी रक्अत में सूरह अल-इख़्लास पढ़े।

❶ उस के बाद ज़मज़म के पास जाएं, उस का पानी पियें और अपने सर पर डालें।

❶ फिर अगर हो सके तो हज्रे अस्वद के पास वापस जायें और **अल्लाहु अक्बर** कहें और उसे अपने हाथ से छुएं, वर्ना सीधा सफा और मरवा के बीच सई के लिए चल पड़ें।

3. सफा व मरवा के बीच सईः

➢ सफा के निकट पहुँच कर यह आयत पढ़े :

﴿إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ فَلا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْراً فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ﴾ [البقرة:١٥٨].

''अवश्य सफ़ा और मरवा अल्लाह की निशानियों में से हैं इसलिए अल्लाह के घर का हज्ज तथा उम्रा करने वाले पर इनका तवाफ (परिक्रमा) कर लेने में भी कोई पाप नहीं और अपनी प्रसन्नता से पुण्य करने वालों का अल्लाह सम्मान करता है तथा उन्हें भली-भांति जानने वाला है।'' (सूरतुल बक़रः 158)

और कहें: (أبدأ بما بدأ الله به) जिस से अल्लाह ने शुरू किया है मैं भी उसी से शुरू करता हूँ।

और सफ़ा पहाड़ी पर चढ़ जाए यहाँतक कि खाना काबा दिखाई दे, चुनांचे उसकी ओर मुँह करे और अपने दोनों हाथों को उसी प्रकार उठाएं जिस तरह दुआ के लिए उठाते हैं और अल्लाह की वहदानियत और बड़ाई बयान करते हुए कहें:

(الله أكبر، الله أكبر، الله أكبر، لاَ إِلَـهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَـهُ، لَـهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَـيْءٍ قَدِيْرٍ. لاَ إِلَـهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ، أَنْجَزَ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الأَحْزَابَ وَحْدَهُ).

अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है। अल्लाह के अतिरिकत कोई भी उपासना के योग्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसी का राज्य है और उसी के लिए प्रशंसा है और वह हर चीज़ पर सर्वशकितमान है। अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं वह अकेला है, उसने अपना वचन पूरा किया और अपने बन्दे की सहायता की और अकेले सारे जत्थों को पराजित किया।

इस के बाद जो भी दुआ मांगना चाहें मांगें, फिर पिछली दुआ को दुहराएं और उसके बाद जो भी दुआ मांगना चाहें मांगें, फिर तीसरी बार पिछली दुआ को दुहराएं।

⮜ उस के बाद पहाड़ी से उतर कर सफा और मरवा के बीच **सात** बार (चक्कर) सई करें, (सफा से मरवा पर जाना एक बार, और फिर मरवा से सफा पर आना दो बार हुआ)।

➢ हर बार दोनों हरे निशानों के बीच तेज़ी से दौड़ें और उसके पहले और बाद साधारण चाल से चलें। (यह केवल पुरूषों के लिए है, औरतें दोनों हरे निशानों के बीच नहीं दौड़ें गीं)।

फिर मरवा पर पहुँच कर पहाड़ी पर चढ़ जाएं, क़िब्ला की ओर मुँह करें, अल्लाह की वहदानियत और बड़ाई बयान करें और दोनों हाथों को उठा कर वह दुआएं पढें जो सफा पर पढ़ी थीं। यह एक चक्कर सई हुई।

➲ फिर सफा पहाड़ी पर लौट कर जाएं, चलने की जगह चलें और दौड़ने की जगह दौड़ें। यह दो चक्कर सई हुई। फिर मरवा पर वापस आएं, इस प्रकार सात चक्कर पूरे करें, अन्तिम चक्कर मरवा पर पूरा होगा।

📝 सई के दौरान कोई विशिष्ट दुआ या ज़िक्र नहीं है, जो भी दुआ, या ज़िक्र या कुर्ऑन की तिलावत करना चाहें कर सकते हैं। अगर सई में यह दुआ करना चाहें : "رب اغفر و ارحم، إنك أنت الأعز الأكرم" तो कर सकते है; क्यों कि कुछ सलफ सालेहीन से यह साबित है।

4. सर के बाल मुँडवाना या कटवानाः

मरवा पर सई का सातवाँ चक्कर पूरा होने के बाद अपने सर के बाल मुंडवाएँ या छोटे करवाएँ। किन्तु मुंडवाना सर्वश्रेष्ठ है। औरत अपने सर के बालों को एकत्र कर के

अंगुली के पोर के बराबर बाल काट ले गी, उसके लिए बाल मुँडवाना जाईज़ नहीं है। इस के बाद एहराम का कपड़ा उतार दें।

अब आप का उम्रा पूरा हो गया और एहराम के कारण जो चीज़ें आप पर हराम हो गई थीं वह सब हलाल हो गईं।

महत्व पूर्ण चेतावनियाँ

- तवाफ या सई के दौरान अगर नमाज़ के लिए जमाअत खड़ी हो जाए, तो तवाफ या सई को रोक कर जमाअत के साथ नमाज़ अदा करें, फिर वापस लौट कर उसी स्थान से तवाफ या सई मुकम्मल करें जहाँ पर पहले रुके थे, नये सिरे से या नये चक्कर से शुरू करने की आवश्यकता नहीं है।
- यदि किसी को तवाफ या सई की संख्या में शंका होजाए तो वह कम संख्या को आधार बनाये गा। उदाहरणतः उसे शंका होजाए कि उसने तवाफ़ या सई के तीन चक्कर लगाये हैं या चार तो तीन को आधार बना कर शेष चार चक्कर और पूरे करे गा।
- इस्लाम धर्म में किसी भी कार्य के स्वीकार किये जाने की २ अनिवार्य शर्तें हैं: ☆ उस कार्य के करने का उद्देश्य केवल अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करना हो। ➢ वह कार्य अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

के बताए हुये तरीक़े अनुसार किया जाए। अतः किसी भी कार्य के करते समय इनका विशेष ध्यान रखें, अन्यथा आप का कर्म नष्ट हो जाये गा।

♉ उम्रा के कार्यकर्म के दौरान प्रायः बहुत सारे लोगों से ऐसे काम देखने में आते हैं जो गलत और अनाधार हैं, नीचे उन में से कुछ की सूची दी जा रही है, आप इन से अवश्य बचें:

⧖ बिना एहराम बाँधे मीक़ात की सीमा से आगे निकल जाना।

⧖ हज्रे अस्वद से पूर्व ही तवाफ प्रारम्भ कर देना।

⧖ हिज्रे काबा (हतीम) के अन्दर से तवाफ करना।

⧖ तवाफ के सातों चक्करों में तेज़ चलना (रमल करना)।

⧖ हज्रे अस्वद को चूमने के लिए दूसरे मुसलमानों को कष्ट देना, मार-पीट और गाली गलौज करना।

⧖ हज्रे अस्वद को बरकत प्राप्त करने की नीयत से छूना।

⧖ काबा के तमाम कोनों या उसकी सारी दीवारों का छूना।

⧖ तवाफ के हर चक्कर के लिए अलग-अलग दुआऐं चुनना।

⧖ तवाफ के दौरान ऊँची-ऊँची आवाज़ से दुआयें करके अशान्ति पैदा करना।

⧖ मक़ामे इब्राहीम के निकट नमाज़ पढ़ने के लिए संघर्ष करके तवाफ करने वालों के लिए बाधा बनना।

⧖ सफ़ा व मरवा के बीच सई के दौरान पूरा समय दौड़ते रहना।

⧖ कुछ औरतों का सफा व मरवा की सई के दौरान दोनों हरे निशान के बीच दौड़ना, जबकि यह आदेश केवल मर्दों के लिए है।

⧖ कुछ सई करने वालों का हर चक्कर में सफा व मरवा पर ﴿إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ﴾ पढ़ना, हालांकि केवल पहली बार सफा पर इस आयत को पढ़ना चाहिए।

⧖ कुछ तवाफ करने वालों का कुछ छपी हुई दुआयें लेकर उन्हें पढ़ना, हालांकि वह उन दुआओं का अर्थ नहीं जानते, कभी-कभार छपाई की गलती के कारण दुआओं का अर्थ बिल्कुल उल्टा हो जाता है, जब्कि उसे चाहिए कि अपने रब्ब से ऐसी दुआ करे जिसे वह समझता हो और जिसकी उसे इच्छा या आवश्यता हो।

⧖ पूरे सर के बालों को छोटा न करवाना।

⧖ एक साथ मिल कर तलबिया कहना।

⧖ तवाफ करते समय काबा को अपने बायें ओर न करना।

⧖ कुछ स्त्रियों का अपने चेहरे को खुला रखना।

⧖ एहराम पहनने से लेकर उम्रा से फारिग़ होने तक इज़्तिबाअ् करना (दाहिना कन्धा खुला रखना)।

⧖ हज्रे अस्वद के बराबर में पहुँचने पर एक से अधिक बार और दोनों हाथों से संकेत करना, जबकि एक बार दाहिने हाथ से करना चाहिए।

♉ कुछ लोग मक्का पहुँच कर एक बार उम्रा कर लेने के बाद बाब-बार तनूईम से उम्रा करते रहते हैं। यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े से साबित नहीं है, और न ही आप के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने ऐसी कभी किया है। अगर यह नेकी और भलाई का काम होता तो वह इस में हम से अवश्य पहल कर चुके होते।

अल्लाह तआला से दुआ है कि हम सभी को दीन की ठीक समझ प्रदान करे और उस पर जमा दे। और हमारे अमल को स्वीकार करे।

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह*)

atazia75@gmail.com